पाठ-२

श्रावक के अष्ट मूलगुण

प्रकाश छाबड़ा, यंग जैन स्टडी ग्रुप, इन्दौर

☎ 99260-40137

मूलगुण

निश्चय

व्यवहार

निश्चय मूलगुण

समस्त पर पदार्थों से दृष्टि हटाकर अपनी आत्मा की श्रद्धा, ज्ञान और लीनता

व्यवहार मूलगुण

श्रावक जीवन की जड़ –

जिसके बिना जीव धर्म-उपदेश का पात्र भी नहीं होता है

अष्ट मूलगुण कौन-कौनसे हैं?

- मद्य (शराबादि) त्याग
- माँस त्याग
- मधु (शहद) त्याग
- पंच उदम्बर फलों का त्याग

मद्य(शराबादि) के दोष

- पदार्थों को सड़ा-गलाकर बनती है
- इसके बनने में लाखों जीवों का घात होता हैं
- इसके सेवन से नशा होता है तथा नशा विवेक भुलवा देता है

मद्य/शराबादि के दोष

- मद्य से क्रोध, मान तीव्र पैदा होते हैं
- अन्य कषायें भी होती हैं - अभिमान, भय, ग्लानि, हास्य, अरति, शोक, काम
- अन्य सभी मादक वस्तुओं का भी त्याग होना चाहिए। जैसे - सिगरेट, बीडी,तम्बाकू, भांग,अफ़ीम, गांजा आदि

माँस के दोष

- त्रस जीवों का घात(हिंसा) होता है
- निरन्तर त्रस जीवों की उत्पत्ति भी होती रहती है

माँस के दोष

- साथ ही खानेवाले के परिणाम भी क्रूर होते हैं
- अण्डा भी त्रस जीवों का शरीर होने से माँस ही है

माँस के त्यागी को.....

- माँसाहारी होटल में भी नहीं खाना चाहिए
- बाजार की वस्तुओं में किसी भी प्रकार से माँस न मिला हो- ये देखकर ही खाना चाहिए

मधु में क्या दोष हैं ?

- महान अपवित्र पदार्थ - मधु-मक्खियों का मल, वमन
- हिंसा भी - अनेक त्रस जीवों के घात से उत्पन्न होता है
- बड़ी-छोटी मधु-मक्खियाँ, उनके बच्चों, अंडों को मसलकर बनाया जाता है

कहीं भी इसका उपयोग नहीं करना चाहिये?

- खाने में
- दवाईयों में
- सौन्दर्य प्रसाधनों में
- छूना भी नहीं चाहिए

पंच उदम्बर फल कौन-से हैं ?

- बड़ का फल
- पीपल
- ऊमर
- कठूमर(अंजीर)
- पाकर

पंच उदम्बर फल के दोष

- इनके मध्य में अनेक सूक्ष्म-स्थूल त्रस जीव चलते-फिरते दिखाई देते हैं
- सुखाकर खाने में भी राग की अधिकता से दोष

मक्खन

- मक्खन का भी त्याग करना चाहिये
- अंतर्मुहूर्त में उसी रंग के त्रस जीव उत्पन्न हो जाते हैं

अन्य प्रकार से अष्ट मूलगुण

दूसरा प्रकार

- 1 मद्य त्याग
- 2 माँस त्याग
- 3 मधु त्याग
- 4 - 8 पाँच पापों का स्थूल त्याग

तीसरा प्रकार

- 1 मद्य त्याग
- 2 माँस त्याग
- 3 मधु त्याग
- 4 पाँच उदम्बर फलों का त्याग
- 5 रात्रि भोजन का त्याग
- 6 बिना छने जल का त्याग
- 7 देवदर्शन की प्रतिज्ञा
- 8 जीव दया

जरूर समझें

- मुक्ति का सच्चा मार्ग तो आत्मज्ञान ही है
- परंतु क्या शराबी-कबाबी को भी आत्मज्ञान प्राप्त हो सकता है ?
- नहीं
- अतः, आत्मज्ञान एवं मुक्ति की अभिलाषा वाले मूलगुण धारण करते ही हैं